संपादकीय

सत्ता ही 'जनार्दन' है!

अब यह भारतीय लोकतंत्र और राजनीति का नया मुहावरा होना चाहिए। हम सुनते आए थे कि जनता 'जनार्दन' होती है। प्रधानमंत्री मोदी ने भी सार्वजनिक मंचों से यह कई बार स्वीकार किया है और चुनाव के बाद जनता के सामने नतमस्तक भी हुए हैं। दरअसल लोकतंत्र के शास्त्रीय अर्थ तो यही हैं, क्योंकि जनता ही जन-प्रतिनिधि चुनती है। प्रधानमंत्रियों, मुख्यमंत्रियों, कद्दावर नेताओं को खारिज कर सत्ता से बाहर भी करती रही है, लेकिन अब भाजपा नए किस्म की राजनीति गढ़ रही है। फिलहाल पश्चिम बंगाल का ही उदाहरण लें। भाजपा ने चुनाव में 15 साल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और उनकी पार्टी तृणमूल कांग्रेस को करारी पराजय दी है। यह जनादेश स्पष्ट है, लेकिन भाजपा इसी से संतुष्ट नहीं है। तृणमूल के भीतर बगावत, टूट और पाला-बदल कोई वैचारिक और नैतिक नहीं है। दरअसल भाजपा तृणमूल को तोड़ कर, अंततः, ममता बनर्जी को 'पार्टीहीन' करने पर आमादा है। दिलचस्प यह है कि बंगाल में तृणमूल का बागी गुट प्रमुख विपक्षी दल है, लिहाजा उसके नेता ऋतब्रत बनर्जी को स्पीकर ने 'नेता प्रतिपक्ष' की मान्यता दी है। दिल्ली में तृणमूल के 20 लोकसभा सांसदों ने 'अलग गुट' के तौर पर, बैठने की अलग व्यवस्था करने के लिए, स्पीकर ओम बिरला को पत्र लिखा है। संभवतः स्पीकर सोमवार, 15 जून को, बागी सांसदों से मुलाकात करेंगे और उनके हस्ताक्षरों की पुष्टि करेंगे। सांसदों का बागी गुट एनडीए को समर्थन देना चाहता है। बाद में वे भाजपा में भी विलीन हो जाएं, तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। सहज सवाल यह है कि आखिर विपक्ष कौन है? तृणमूल विपक्षी दल है अथवा एनडीए का संभावित घटक! बंगाल में विधायकों और सांसदों को जनादेश क्या मिले थे? बेशक जनादेश भाजपा के खिलाफ थे, लेकिन अब कमोबेश सांसद सत्ता-समर्थक हो रहे हैं। यह कौन-सी राजनीति या जनादेश की स्वीकृति है? क्या अब संवैधानिक शुचिता या नैतिकता की बात करना ही छोड़ दें? सर्वोच्च अदालत ने भी विभाजन, टूट-फूट विधायक अथवा संसदीय दल में नहीं माना था। शायद ऐसा संविधान-पीठ का फैसला है। शीर्ष अदालत पार्टी के भीतर दोफाड़ और दलबदल को 'विभाजन' मानती है, लिहाजा तृणमूल के भीतर भाजपा जो करवा रही है, वह असंवैधानिक है। ममता बनर्जी को इसकी पर्याप्त जानकारी होगी, तभी उन्होंने विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तय करने के स्पीकर के फैसले को कोलकाता उच्च न्यायालय में चुनौती दे रखी है। सवाल दलबदल का इतना गंभीर नहीं है। केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव से बागी तृणमूल सांसद सुदीप बंद्योपाध्याय ने, एक और बागी शताब्दी रॉय के साथ, मुलाकात और विमर्श किया है। सुदीप ने गृहमंत्री अमित शाह से भी करीब 30 मिनट तक मुलाकात, बातचीत की है। सुदीप कभी तृणमूल के संसदीय नेता और ममता के बेहद भरोसेमंद होते थे। रविवार को मुख्यमंत्री सुवेन्दु अधिकारी एक बार फिर बागी सांसदों की बैठक में उपस्थित रहे। यदि तृणमूल के तिनका-तिनका होने या करने में भाजपा की कोई भूमिका नहीं है, तो केंद्रीय मंत्री और मुख्यमंत्री बागी चेहरों से लगातार, बार-बार, मुलाकातें क्यों कर रहे हैं? क्या बार-बार चाय पीने का मन करता है? दरअसल इस राजनीति ने नया मुहावरा यह गढ़ दिया है कि अब विपक्ष भी 'सत्तामय' होगा! कोई ताकतवर, प्रतिद्वंद्वी विपक्ष नहीं होगा! यदि राजनीतिक तौर पर किसी दल या जन-प्रतिनिधि को जिंदा रहना है, तो भाजपा के मुताबिक ही चलना पड़ेगा।

भारत से सेवा निर्यात की अनुकूलताएं

अब भारत से सेवा निर्यात में तेजी से वृद्धि के लिए सेवाओं की गुणवत्ता, दक्षता, उत्कृष्टता तथा सुरक्षा को लेकर और अधिक प्रयास करने होंगे। भारत को अपने सेवा निर्यात में विविधता लाने और अन्य उभरते क्षेत्रों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। हमें सेवा निर्यात बढ़ाने के लिए शोध, नवाचार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के मापदंडों पर भी आगे बढ़ना होगा। उम्मीद करें कि भारत के एफटीए, द्विपक्षीय व्यापार समझौते तथा ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर भारत से सेवा निर्यात बढ़ाने के मद्देनजर गेम चेंजर की अहम भूमिका निभाएंगे।

यकीनन जहां भारत की एआई क्षमता और डिजिटल अर्थव्यवस्था भारत के सेवा निर्यात को मजबूती दे रही है, वहीं भारत के व्यापार समझौते भारत से सेवा निर्यात बढ़ाने के लिए नई शक्ति बनते हुए दिखाई दे रहे हैं। हाल ही में एक जून से भारत और ओमान के बीच लागू वृहद आर्थिक एवं साझेदारी समझौता (सीईपीए) भारत से ओमान को सेवा निर्यात बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इस समय भारत से ओमान को सेवा निर्यात करीब 67 करोड़ डॉलर का है। यह आगामी पांच वर्षों में 1.5 अरब से 2 अरब डॉलर के स्तर पर पहुंचने की उम्मीद है। प्रमुख रूप से ओमान ने अपने 127 से अधिक सेवा उप-क्षेत्रों में भारतीय कंपनियों को प्रवेश की अनुमति दी है। इस समझौते के तहत ओमान में भारतीय पेशेवरों, चिकित्सा, शिक्षा, डिजिटल, विकास और पर्यटन के क्षेत्रों में अभूतपूर्व वृद्धि की उम्मीद है। उल्लेखनीय है कि भारत के विभिन्न व्यापार समझौतों में सेवा निर्यात बढ़ाने को प्राथमिकता दी गई है। पिछले माह 15 से 20 मई तक प्रधानमंत्री मोदी ने पांच देशों- संयुक्त अरब अमीरात, नीदरलैंड, स्वीडन, नॉर्वे और इटली की आधिकारिक यात्रा के दौरान इन देशों के साथ जो द्विपक्षीय व्यापार समझौते किए हैं, उनसे भारत की नई पीढ़ी के लिए सेवा निर्यात में आगे बढ़ने की संभावनाएं उभरकर दिखाई दे रही हैं। विगत 27 अप्रैल को भारत और न्यूजीलैंड के बीच एक ऐतिहासिक एफटीए पर हस्ताक्षर हुए हैं।

न्यूजीलैंड के साथ किए गए इस एफटीए का अत्यधिक मजबूत पक्ष भारत से सेवा निर्यात बढ़ाना और भारत से पेशेवरों को न्यूजीलैंड में अच्छे अवसरों के लिए आगे बढ़ाना भी है। यह भी महत्वपूर्ण है कि पिछले वर्ष 2025 में भारत के द्वारा ब्रिटेन के साथ किए गए एफटीए का भी इसी वर्ष 2026 में आगामी महीनों में कार्यान्वयन शुरू होगा। साथ ही भारत-यूरोपीय संघ एफटीए का क्रियान्वयन भी इसी वर्ष संभावित है। इस समझौते को सभी समझौतों की जननी कहा गया है। अब मॉरीशस, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), ऑस्ट्रेलिया और चार यूरोपीय देशों आइसलैंड, स्विट्जरलैंड, नॉर्वे और लिकटेंस्टाइन के समूह यूरोपियन फ्री ट्रेड एसोसिएशन (एफ्टा) के साथ सफलतापूर्वक कार्यान्वित हो रहे एफटीए के और अधिक लाभ मिलते हुए दिखाई देंगे। इतना ही नहीं कनाडा, इजरायल, रूस, पेरू, चिली, दक्षिण अफ्रीका और मेक्सिको के साथ जो मुक्त व्यापार समझौते अंतिम चरण में हैं, उन लगभग सभी समझौतों में भारत से सेवा निर्यात बढ़ाने के प्रावधानों को प्राथमिकता दी गई है। इस परिप्रेक्ष्य में उल्लेखनीय है कि हाल ही में अमरीकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने नई दिल्ली में अपनी आधिकारिक यात्रा के दौरान भारत और अमरीका के बीच जिस बहुप्रतीक्षित व्यापार समझौते को कुछ ही सप्ताह में अंतिम रूप दिए जाने की बात कही है, उससे भी अमरीका को भारत से सेवा निर्यात बढ़ेगा। हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के द्वारा

'अर्थव्यवस्था की स्थिति' पर जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि पश्चिम एशिया संकट की चुनौतियों के बीच भी भारत से बढ़ता सेवाओं का निर्यात (सर्विस एक्सपोर्ट) भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूती दे रहा है। देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में सेवा क्षेत्र का करीब 53.6 प्रतिशत योगदान है।

पिछले वित्त वर्ष 2025-26 में भारत के कुल 863.11 अरब डॉलर के निर्यात में भारत से सेवा निर्यात की हिस्सेदारी सर्वोच्च स्तर पर पहुंचते हुए 421.32 अरब डॉलर रही है। अब जहां मार्च 2026 में भारत से सेवाओं का निर्यात 35.20 अरब डॉलर का रहा, वहीं यह सेवा निर्यात अप्रैल 2026 में बढ़कर 37.24 अरब डॉलर हो गया है। पिछले 11 वर्षों में सेवा निर्यात ढाई गुना से भी अधिक हो गया है। ऐसे में एक ओर भारत मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) और द्विपक्षीय व्यापार समझौतों के माध्यम से सेवा निर्यात बढ़ाने की राह पर आगे बढ़ रहा है, वहीं दूसरी ओर ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (जीसीसी) भारत से सेवा निर्यात बढ़ाने के मद्देनजर गेम चेंजर की अहम भूमिका निभाते हुए दिखाई दे रहे हैं। इससे जहां भारत का कुल निर्यात बढ़ेगा, वहीं भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में भी वृद्धि होगी। उल्लेखनीय है कि हाल ही में प्रकाशित नैसकॉम और जिनोव रिपोर्ट मई 2026 के मुताबिक भारत 2177 जीसीसी के साथ दुनिया के सबसे बड़े और प्रमुख जीसीसी केंद्र के रूप में उभरकर दिखाई दे रहा है। भारत जीसीसी के डिलीवरी इंजन (बेक ऑफिस) से बदलकर एंटर प्राइज नर्व सेंटर (डिसीजन मेकिंग) हब और वैश्विक नवाचार के पावर हाउस के रूप में स्थापित हो गया है। दुनिया के करीब 55 प्रतिशत से अधिक जीसीसी भारत में हैं। साथ ही भारत की जीडीपी में भारत के जीसीसी का योगदान 1.5 प्रतिशत से अधिक है। गौरतलब है कि भारत में बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा जीसीसी की तेजी से नई स्थापनाओं के कारण सेवा निर्यात तेजी से बढ़ रहा है। जीसीसी प्रमुख रूप से आईटी सपोर्ट, कस्टमर सर्विस, फाइनेंस, एचआर और रिसर्च एंड डेवलपमेंट पर ध्यान केंद्रित करती हैं। भारत में एआई इंटरनेट ऑफ थिंग्स, कृत्रिम बुद्धिमता और डेटा एनालिटिक्स जैसे क्षेत्रों में शोध एवं विकास और जबरदस्त स्टार्टअप माहौल और सरकार के द्वारा दिए जा रहे अभूतपूर्व प्रोत्साहनों के चलते अमरीका, यूरोप और एशियाई देशों की बड़ी-बड़ी कंपनियां अपने ग्लोबल इन हाउस सेंटर तेजी से शुरू करते हुए दिखाई दे रही हैं।

गौरतलब है कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के नवीनतम विश्व आर्थिक परिदृश्य में प्रकाशित सेवा निर्यात से संबंधित रिपोर्ट में कहा गया है भारत से सेवाओं का निर्यात रफ्तार से बढ़ रहा है। वैश्विक सेवाओं के निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 2005 में 1.9 फीसदी से बढ़कर इस समय करीब 4.3 फीसदी हो गई। वैश्विक सेवा निर्यात में भारत ने सातवां स्थान हासिल कर लिया है। वर्ष 2001 में सेवा निर्यात के मामले में भारत 24वें स्थान पर था। सेवा निर्यात के क्षेत्र की यह उपलब्धि मुख्य रूप से टेलीकॉम, आईटी और बिजनेस सेवाओं की बदौलत संभव हो पाई है। ये क्षेत्र देश के कुल सेवा निर्यात का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा रखते हैं। इनके साथ-साथ भारत सांस्कृतिक और मनोरंजन सेवा निर्यात में भी आगे है। सेवा निर्यात की मौजूदा प्रगति देश में हो रहे सेवा क्षेत्रों में संरचनात्मक सुधारों, तकनीकी विकास और नई पीढ़ी की उच्च कौशल युक्त क्षमताओं के लाभों का परिणाम भी है। खास बात यह भी है कि आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी कौशल के कारण भारत का सेवा निर्यात तेजी से बढ़ रहा है। एआई कौशल की पहुंच में भारत, अमरीका के ठीक पीछे है।

निस्संदेह सेवा निर्यात का वैश्विक केंद्र बनने के लिए भारत को और अधिक एआई क्षमता और क्षमतापूर्ण डिजिटल अर्थव्यवस्था के साथ सेवा निर्यात को तेजी से बढ़ाने की रणनीति के साथ आगे बढ़ना होगा। खासतौर से भारत के द्वारा एफटीए के व्यावहारिक कार्यान्वयन और निर्यातकों को इन समझौतों का उपयोग करने में सहायता प्रदान करने पर ध्यान दिया जाना होगा। ज्ञातव्य है कि भारत का एफटीए उपयोग करीब 25 प्रतिशत के आसपास रहा है, जबकि विकसित अर्थव्यवस्थाओं में यह 70-80 प्रतिशत तक है। अब भारत से सेवा निर्यात में तेजी से वृद्धि के लिए सेवाओं की गुणवत्ता, दक्षता, उत्कृष्टता तथा सुरक्षा को लेकर और अधिक प्रयास करने होंगे। भारत को अपने सेवा निर्यात में विविधता लाने और अन्य उभरते क्षेत्रों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। हमें सेवा निर्यात बढ़ाने के लिए शोध, नवाचार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के मापदंडों पर भी आगे बढ़ना होगा। उम्मीद करें कि भारत के एफटीए, द्विपक्षीय व्यापार समझौते तथा ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर भारत से सेवा निर्यात बढ़ाने के मद्देनजर गेम चेंजर की अहम भूमिका निभाएंगे।

-डा. जयंती लाल भंडारी

सूचना

दैनिक सच एक्सप्रेस में प्रदेशभर के 42 जिला प्रतिनिधि व 200 से अधिक तहसील और विकासखण्ड प्रतिनिधि सेवाएं दे रहे हैं। लगभग यह सभी किसी अन्य न्यूज एजेंसी या सोशल मीडिया से भी जुड़े हुए हैं। अखबार के अलावा किसी अन्य प्लेटफार्म पर इनकी टिप्पणी या समाचार को दैनिक सच एक्सप्रेस से जोड़कर न देखा जाए।

प्रबंध सम्पादक

करो माता पिता की सेवा सम्मान स्वतः हो जाएगा जीवन कल्याण

जीवन समाधान

महाराज वैभव भटेले
(धर्म, अध्यात्म एवं राष्ट्रीयता के ओजस्वी वक्ता)
Mobile No. 9303139229

देव दुर्लभ मानव जीवन मिला है तो भगवान की भक्ति करनी ही चाहिए। वेद शास्त्र व पुराणों का ज्ञान प्राप्त करना ही चाहिए। इसके लिए अवश्य ही किसी सद्गुरु की शरण में जाना ही चाहिए। वे ब्रह्मज्ञानी गुरु तुम्हें भगवान की भक्ति करना भी सिखाएंगे। समस्त पापों को नष्ट करने वाला ज्ञान भी बताएंगे। लेकिन साथ में तुम्हें यह बात अवश्य ही समझाएंगे यही कि भले ही न की हो भक्ति न पाया हो ज्ञान, माता पिता की सेवा से प्रसन्न होते भगवान! भगवान की भक्ति के बहुत सारे नियम हैं। ब्रह्ममुहूर्त में उठने से लेकर स्नान ध्यान और दान के साथ पूजा प्रार्थना है मंत्रजाप और ईश्वर आराधना है। व्रत उपवास है सुबह दोपहर शाम तीनों याम त्रिकाल संध्या से ही भगवद प्राप्ति की आस है। लेकिन इन सभी ईश्वरीय आराधन के साथ साधक के जीवन में सेवाभाव का होना अत्यंत आवश्यक है। और सेवा वही कर सकता है सच्चा सेवक वही बन सकता है जिसे न तो निजी सुखों की परवाह है और न ही निज सम्मान का ध्यान। जो हर तरह के कष्ट सहकर भी अपने बूढ़े माता पिता सास ससुर एवं परिजनों की सेवा करता है वो एक बार भक्ति के नियम पालन न भी कर पाए तब भी उससे भगवान अति प्रसन्न होते हैं। क्योंकि तरह-तरह के कष्टों से दुखी बूढ़ी आत्माएं भगवान को पुकारती हैं और भगवान हमें उनकी सेवा के लिए प्रेरित करते हैं। निराकार ईश्वर जब मानवरूप में अवतार लेते हैं तब वे वृद्धों की सेवा लीला भी करते हैं। चाहे त्रेता में अवतरित प्रभुश्रीराम हों या द्वापर के श्रीकृष्ण इन्होंने अपने वृद्ध माता पिता की सेवा की है और जगत को बताया है कि मैं उस घर -परिवार पर ही सबसे ज्यादा कृपा बरसाता हूं जहां वृद्धों का सम्मान है वृद्ध माता पिता की सेवा है। भगवान की दृष्टि में यही सबसे बड़ी भक्ति और सबसे बड़ा ज्ञान है। यह तो सच भी है माता पिता घर-परिवार के लोग परेशानी में रहें और सक्षम लोग पूजा भक्ति में व्यस्त रहें। मठ मंदिर और तीर्थयात्रा पर रहें इससे भगवान प्रसन्न नहीं होने वाले। अपनी पूजा भक्ति से भगवान को प्रसन्न करना है तो पहले अपने स्वधर्म का पालन करो।अर्थात माता पिता और परिजनों का सहयोग करो। तब ईश्वर प्रसन्न भी होते हैं और मनोवांछित फल के साथ जीवन समाधान भी प्रदान करते हैं।

सच वाणी

सभी आलेख लेखकों के अपने विचार हैं।
दैनिक सच एक्सप्रेस सभी विषयों पर तटस्थ था, है और रहेगा।

सम्मान, सुरक्षा व संवेदना के हकदार हैं बुजुर्ग

हर वर्ष 15 जून को विश्वभर में विश्व वृद्धजन दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य बुजुर्गों के प्रति होने वाले शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक दुर्व्यवहार के प्रति लोगों को जागरूक करना तथा उनके अधिकारों और सम्मान की रक्षा सुनिश्चित करना है। यह दिवस हमें याद दिलाता है कि जिन बुजुर्गों ने अपने जीवनभर परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, उन्हें जीवन के अंतिम पड़ाव में उपेक्षा, तिरस्कार और शोषण का सामना नहीं करना चाहिए। आज दुनिया की जनसंख्या तेजी से वृद्धावस्था की ओर बढ़ रही है। स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार और जीवन प्रत्याशा बढ़ने के कारण बुजुर्गों की संख्या लगातार बढ़ रही है। भारत में भी 60 वर्ष से अधिक आयु के नागरिकों की संख्या करोड़ों में पहुंच चुकी है। ऐसे में उनकी सुरक्षा, सम्मान और कल्याण सुनिश्चित करना समाज और सरकार दोनों की जिम्मेदारी है।

वृद्धजन दुर्व्यवहार क्या है?

वृद्धजन दुर्व्यवहार का अर्थ है बुजुर्गों के साथ किसी भी प्रकार का ऐसा व्यवहार जो उनके सम्मान, स्वास्थ्य, सुरक्षा या अधिकारों को नुकसान पहुंचाए। यह दुर्व्यवहार शारीरिक हिंसा, मानसिक प्रताड़ना, आर्थिक शोषण, उपेक्षा अथवा सामाजिक अलगाव के रूप में सामने आ सकता है। कई बार बुजुर्गों को अपमानित किया जाता है, उनकी बातों को महत्व नहीं दिया जाता या उन्हें परिवार के निर्णयों से दूर रखा जाता है। कुछ मामलों में उनकी संपत्ति और धन का अनुचित लाभ उठाया जाता है। कई बुजुर्ग अकेलेपन, असुरक्षा और भावनात्मक उपेक्षा का शिकार भी होते हैं। यह सब उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालता है।

बढ़ती समस्या और चिंताजनक स्थिति

संयुक्त राष्ट्र और विभिन्न सामाजिक अध्ययनों के अनुसार विश्वभर में बड़ी संख्या में बुजुर्ग किसी न किसी रूप में दुर्व्यवहार का सामना कर रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि वास्तविक आंकड़े इससे भी अधिक हो सकते हैं क्योंकि अधिकांश बुजुर्ग सामाजिक बदनामी, पारिवारिक दबाव या भय के कारण शिकायत दर्ज नहीं कराते। भारत में संयुक्त परिवार व्यवस्था के कमजोर होने, शहरीकरण, व्यस्त जीवनशैली और सामाजिक मूल्यों में बदलाव के कारण कई बुजुर्ग अकेलेपन और उपेक्षा का सामना कर रहे हैं। आर्थिक निर्भरता और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उनकी स्थिति को और कठिन बना देती हैं। वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या भी इस सामाजिक चुनौती की ओर संकेत करती है।

बुजुर्गों का समाज में योगदान

बुजुर्ग किसी भी समाज की अमूल्य धरोहर होते हैं। उनके पास अनुभव, ज्ञान और जीवन के संघर्षों से प्राप्त सीख का विशाल भंडार होता है। परिवार में वे मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं तथा नई पीढ़ी को संस्कार, परंपराएं और जीवन मूल्य सिखाते हैं। आज जिन युवाओं और बच्चों को बेहतर शिक्षा, संस्कार और अवसर प्राप्त हैं, उसके पीछे कहीं न कहीं बुजुर्गों का त्याग, परिश्रम और योगदान जुड़ा हुआ है। इसलिए उनके प्रति सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है। किसी भी सभ्य समाज की पहचान इस बात से होती है कि वह अपने वरिष्ठ नागरिकों के साथ कैसा व्यवहार करता है।

कानूनी संरक्षण और सरकारी प्रयास

भारत सरकार ने वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा और कल्याण के लिए अनेक कदम उठाए हैं। 'माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण और कल्याण अधिनियम 2007' के अंतर्गत संतान पर अपने माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों की देखभाल की जिम्मेदारी निर्धारित की गई है। इसके अलावा वरिष्ठ नागरिकों को स्वास्थ्य सेवाओं, पेंशन योजनाओं और अन्य सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों का लाभ प्रदान किया जाता है। विभिन्न राज्यों में वरिष्ठ नागरिक हेल्पलाइन, कानूनी सहायता सेवाएं और परामर्श केंद्र भी संचालित किए जा रहे हैं। हालांकि केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज में संवेदनशीलता और जागरूकता बढ़ाना भी आवश्यक है।

युवाओं और समाज की भूमिका

वृद्धजन दुर्व्यवहार की समस्या का समाधान केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं है। इसके लिए परिवार, समाज और प्रत्येक नागरिक को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। युवाओं को चाहिए कि वे अपने माता-पिता और दादा-दादी के साथ समय बिताएं, उनकी भावनाओं का सम्मान करें और उनकी आवश्यकताओं को समझें। विद्यालयों और महाविद्यालयों में भी वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान और अधिकारों से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। सामाजिक संगठनों और स्वयंसेवी संस्थाओं को बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य शिविर, मनोरंजन कार्यक्रम और सहायता सेवाएं संचालित करनी चाहिए। समाज में ऐसा वातावरण बनाना आवश्यक है जहां बुजुर्ग स्वयं को सुरक्षित, सम्मानित और उपयोगी महसूस करें।

संवेदनशीलता ही सबसे बड़ा समाधान

बुजुर्गों को केवल आर्थिक सहायता ही नहीं, बल्कि प्रेम, सम्मान और अपनापन भी चाहिए। उनके साथ कुछ समय बिताना, उनकी बातें सुनना और उन्हें परिवार का महत्वपूर्ण सदस्य मानना उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकता है। कई बार छोटी-सी संवेदनशीलता भी उनके अकेलेपन और निराशा को दूर कर सकती है। विश्व वृद्धजन दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस हमें यह संदेश देता है कि बुजुर्ग बोझ नहीं, बल्कि समाज की अमूल्य संपत्ति हैं। उनके अनुभव और मार्गदर्शन से समाज मजबूत बनता है। इसलिए उनके अधिकारों की रक्षा करना और उन्हें सम्मानपूर्ण जीवन प्रदान करना हम सभी की साझा जिम्मेदारी है।

निष्कर्ष

15 जून को मनाया जाने वाला विश्व वृद्धजन दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस केवल एक दिवस नहीं, बल्कि आत्मचिंतन का अवसर है। यह हमें अपने परिवार और समाज में बुजुर्गों की स्थिति पर विचार करने तथा उनके प्रति सम्मान और संवेदनशीलता बढ़ाने की प्रेरणा देता है। आइए इस अवसर पर हम संकल्प लें कि अपने घर और समाज के प्रत्येक बुजुर्ग को सम्मान, सुरक्षा और स्नेह प्रदान करेंगे। उनके अनुभवों का आदर करेंगे, उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखेंगे और ऐसा समाज बनाएंगे जहां हर वरिष्ठ नागरिक गरिमा, आत्मसम्मान और खुशहाली के साथ जीवन जी सके। यही इस दिवस की सच्ची सार्थकता है। बुजुर्गों का सम्मान होना ही चाहिए।

-प्रो. मनोज डोगरा

वर्ग पहेली 2884

बायें से दायें:- 1) करतूत, 3) ईर्ष्यालु, 6) यदि, 7) रात, 9) वर्षा-मेघ, 11) कुंजी, 12) बढ़ना; विकसना, 14) अग्निशिखा, 16) अग्नि, 18) अप्सरा, 19) चालीस का समूह, 21) त्वचा, 22) व्यस्त, 23) नेवला; एक पांडव, 25) अपकीर्ति, 27) भीड़, 28) तड़क-भड़क.

ऊपर से नीचे:- 1) बुजदिली; नामर्दी, 2) मूर्खता, 3) लोटे के तरह का एक पात्र; संसार, 4) डर जाना, 5) गति, 6) शांति, 8) पूज्य; महान, 10) गंगा, 12) रेलगाड़ी का मार्ग, 13) देखकर जान लेना, 15) जख्म का पुरंड, 16) सुलभ, 17) अचंभा, 20) मूर्ख; वृषभ, 22) विष्ठा, (घोड़े की), 24) कुटुंब, 25) अग्रज; भव्य, 26) मधुर.

(उत्तर: अगले अंक में)

पिछली पहेली का उत्तर

सचएक्सप्रेस पंचांग

ज्योतिषाचार्य श्रीमती सुषमा शंकरलाल पुरोहित
मो: 8823008303

मंगलवार 16 जून 2026
सूर्योदय- प्रातः 5:31 बजे
सूर्यास्त- शाम 6:54 बजे
चंद्रोदय 6:39
चंद्रास्त- 8:54
शक संवत- 1948 पराभव
विक्रम संवत- 2083 रौद्र
पूर्णिमांत महीना- ज्येष्ठ
पक्ष- शुक्ल
तिथि- प्रतिपदा प्रातः 6:33 तक पश्चात द्वितीया रात्रि अंत तक।
नक्षत्र- आर्द्रा रात्रि 7:20 तक पश्चात पुनर्वसु
योग- वृद्धि रात्रि 12:38 तक पश्चात ध्रुव
करण- बालव दिन 2:43 तक पश्चात कौलव
सूर्य राशि- मिथुन
चंद्र राशि- मिथुन
शुभांक 3-9-2

मेष

किसी रिश्तेदारी में आना जाना हो सकता है। भाई बहनों से सहयोग प्राप्त हो सकता है। शिवजी को अबीर मिश्रित जल चढ़ाएं। शुभ अंक-5, शुभ रंग-हरा।

वृष

विद्यार्थियों के लिए शुभ दिन। माता पिता से भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। धार्मिक कार्यक्रम घर में होने की संभावना। शिवजी को अक्षत अर्पित करें। शुभ अंक-2, शुभ रंग-भूरा।

मिथुन

विवाह योग्य जातकों को अच्छे प्रस्ताव प्राप्त हो सकते हैं। बड़े-बुजुर्गों से सलाह अवश्य लें। पुराने मित्रों से सहयोग। शिवजी को हरी दुर्वा अर्पित करें। शुभ अंक-4, शुभ रंग-भूरा।

कर्क

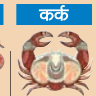

पेट-पाचन तंत्र संबंधी समस्या बन सकती है। खान पान का विशेष ध्यान रखें। परिवार के सदस्यों में आपसी तालमेल उत्तम। शिवजी को जल अर्पित करें। शुभ अंक-1, शुभ रंग-स्लेटी।

सिंह

नौकरी की में लगे जातकों को आज अच्छे आफर प्राप्त हो सकते हैं। अतः सजग रहें। बड़े भाई से सहयोग प्राप्त हो सकता है। शिवजी को लाल फूल अर्पित करें। शुभ अंक-2, शुभ रंग-लाल।

कन्या

घर का वातावरण अनुकूल और धार्मिक। परिवार में यात्रा के योग संभव। व्यापारी बंधु आज लाभ प्राप्त कर सकते हैं। शिवजी को बिल्वपत्र अर्पित करें। शुभ अंक-4, शुभ रंग-नीला।

तुला

प्रबंधन क्षेत्र से जुड़े जातक अपने कार्य क्षेत्र में आपसी राजनीति का शिकार हो सकते हैं। अतः सजग रहें। कोई नया कार्य आज शुरू न करें। शिवजी को फल अर्पित करें। शुभ अंक-3, शुभ रंग-लाल।

वृश्चिक

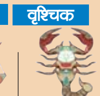

परिवार में शुभता। पर थोड़ी मानसिक चिंता बनी रहेगी। किसी विश्वसनीय के साथ मन की बात साझा करें। शिवजी को चावल गुलाल अर्पित करें। शुभ अंक-8, शुभ रंग-पीला।

धनु

किसी पर भरोसा ज्यादा न करें। मन विचलित हो सकता है। वाणी संयमित रखें। शिवजी को अक्षत अर्पित करें। शुभ अंक-1, शुभ रंग-गुलाबी।

मकर

पुरानी कोई समस्या चली आ रही है तो आज समाधान प्राप्त हो सकता है। जिससे मन खुश होगा। व्यापारी बंधु को लाभ प्राप्त योग। शिवजी को काला तिल अर्पित करें। शुभ अंक-6, शुभ रंग-केसरी।

कुंभ

परिवार के सदस्यों से थोड़ी बहस संभव। अपनी वाणी पर संयम आवश्यक। मन विचलित हो सकता है। शिवजी को तिल मिश्रित जल अर्पित अर्पित करें। शुभ रंग-1, शुभ रंग-आसमानी।

मीन

विवाह योग्य जातकों को मामा पक्ष से अच्छे प्रस्ताव प्राप्त हो सकते हैं। परिवार के सदस्यों में अच्छा तालमेल शिवजी को अक्षत अर्पित करें। शुभ अंक-1, शुभ रंग-केसरी।

ग्रह स्थिति

[illegible]

दिशा शूल

उत्तर दिशा में यात्रा वर्जित है। अतिआवश्यक होने पर गुड़ या बेसन खा कर निकलें।

चौघड़िया

चर सुबह 9:00-10:30 तक
लाभ सुबह 10:30-12:00 तक
अमृत दिन 12:00-1:30 तक
शुभ दोपहर 3:00-4:30 तक

अभिजीत मुहूर्त

सुबह 11:45 से दिन 12:25 तक

सर्वार्थ सिद्धि योग

ता. 5 को सूर्योदय से रात्रि 2:57 तक। ता.9 को सूर्योदय से रात्रि अंत तक। ता. 11 को सूर्योदय से रात्रि 3:03 तक। ता. 15 को सूर्योदय से रात्रि 8:58 तक। ता. 18 को सूर्योदय से अपराह्न 4:33 तक। ता. 21 को दिन 2:37 से रात्रि अंत तक। ता. 26 को रात्रि 8:29 से रात्रि अंत तक।

पुष्य नक्षत्र: ता. 17 को शाम 5:50 ता. 18 की शाम 4:33 तक।

त्रिपुष्कर योग - ता.18 को रात्रि 7:20 से रात्रि अंत तक। ता. 21 को दिन 2:37 से रात्रि 8:01 तक।

रवि योग

ता.6 की प्रातः 6:07 से ता. 7 की सुबह 7:55 तक। ता. 17 के दिन 1:41 से ता.18 के दिन 11:32 तक। ता. 20 की प्रातः 5:28 से ता. 22 के दिन 12:36 तक। ता. 24 की प्रातः 5:29 से ता.25 की अपराह्न 4:29 तक। ता. 27 की रात्रि 10:15 से ता. 29 की रात्रि 1:08 तक।

अमृत सिद्धि योग: ता. 15 को सूर्योदय से रात्रि 8:58 तक। ता. 18 को सूर्योदय से अपराह्न 4:33 तक।

द्विपुष्कर योग - ता. 6 को रात्रि 10:12 से रात्रि अंत तक।